

न्यायालय: सहायक कलक्टर (फास्ट-ट्रैक) भादरा, जिला हनुमानगढ़

पीठासीन अधिकारी : श्री राजकुमार कस्वा आर.ए.एस.

प्रकरण सं० :- 52/2017

अनवान

1. गोपाल पुत्र जसुराम जाति जाट निवासी शिवदानपुरा तहसील भादरा जिला हनुमानगढ़।

— सायल

बनाम

1. शिशपाल पुत्र मामचन्द जाति जाट निवासी शिवदानपुरा तहसील भादरा जिला हनुमानगढ़।
2. भादरसिंह
3. भजनलाल
4. रोशनलाल

पुत्रान शिशपाल जाति जाट निवासी शिवदानपुरा तहसील भादरा जिला हनुमानगढ़।

— अप्रार्थीगण

प्रार्थना पत्र बाबत : अस्थाई निषेधाज्ञा

अन्तर्गत धारा 212 राज०काश्तकारी अधिनियम

उपस्थिति : वकील श्री सुरेन्द्र बैनीवाल : प्रार्थी

वकील श्री दिवानसिंह : अप्रार्थी 1

वकील श्री नरेन्द्र शर्मा एवं वकील श्री योगेश शर्मा

: अप्रार्थी सं० 2 ता 4

प्रकरण सं० :- 51/2017

अनवान

2. शिशपाल पुत्र मामचन्द जाति जाट निवासी श्योदानपुरा बुढेर तहसील भादरा जिला हनुमानगढ़ राज०

— प्रार्थी

बनाम

5. गोपाल पुत्र जसुराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
6. शारदा पुत्री जसुराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
7. विनोद पुत्र जसुराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
8. सुनिता पुत्री जसुराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
9. महेन्द्र पुत्र जसुराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
10. बिमला पुत्री रामकुमार जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
11. बिरमा पुत्री रामकुमार जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
12. हवासिंह पुत्र मोमनराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
13. देवीलाल पुत्र मोमनराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
14. मोहनलाल पुत्र मोमनराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
15. भजनलाल पुत्र रामकुमार जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
16. बहादुर पुत्र शीशपाल जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
17. रोशनलाल पुत्र शीशपाल जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।

18. दुनीराम पुत्र ख्यालीराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
19. श्योनाथ पुत्र शीशपाल जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
20. रतनलाल पुत्र ख्यालीराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
21. राजकुमार पुत्र शांति जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
22. ममता पुत्री शांति जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
23. सुमन पुत्री शांति जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
24. परसाराम पुत्र गणपत जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
25. जयलाल पुत्र गणपत जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
26. रामेश्वरलाल पुत्र गणपत जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
27. बिदामी पत्नी जसुराम जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
28. मोमनराम वल्द मामचन्द जाति जाट निवासी श्योदानपुरा तहसील भादरा।
29. राजस्थान सरकार जरिये तहसीलदार राजस्व भादरा।

- अप्रार्थीगण

प्रार्थना पत्र बाबत : अस्थाई निषेधाज्ञा

अन्तर्गत धारा 212 राज0काश्तकारी अधिनियम व

प्रार्थना पत्र बाबत : नियुक्त करने रिसिवर

अन्तर्गत धारा 212(ख) राज0काश्तकारी अधिनियम

उपस्थिति : वकील श्री दिवान सिंह : प्रार्थी

वकील श्री सुरेन्द्र बैनीवाल : अप्रार्थीगण 1, 5, 8, 10

निर्णय

दिनांक :

चूंकि दोनों प्रार्थना पत्रों की विषयवस्तु समान है एवं कृषि भूमि का रकबा भी एक जैसा ही है। इसलिए दोनों प्रार्थना पत्रों का निर्णय एक साथ किया जा रहा है दोनों प्रार्थना पत्रों के संक्षेप में तथ्य इस प्रकार है कि ग्राम शिवदानपुरा के खाता सं0 50/53 के मु0नं0 133 की 0.253 है0 मु0नं0 134 की 0.9490 है0, मु0नं0 145 की 9.4090 है0 मु0नं0 150 की 0.4810 है0 कुल खसरा 4 कुल क्षेत्रफल 11.0920 है0 कृषि भूमि में परसाराम, जयलाल, रामेश्वरलाल का 175/877 हि0 दुनीराम, श्योनाथ, रतनलाल का 175/877 हि0, राजकुमार, ममता, सुमन 177/877 है0 हि0 गोपाल, शारदा, विनोद, सुनिता, महेन्द्र का 61-3/4 हिस्सा, देवीलाल, हवासिंह, का 70 हिस्सा, मोमनराम वल्द मामचन्द का 131-3/4 हिस्सा, मोहनलाल का 87-5/6 हिस्सा, बिमला, बिरमा 43-11/12 हिस्सा, रामकुमार, भजनलाल, बहादुर, रोशनलाल पि0 शिशपाल का 98-13/16 हिस्सा, प्रार्थी शिशपाल का 32-15/16 हिस्सा इसी प्रकार खाता सं0 51/52 के खसरा नं0 145/2 कि 8.473 है0 खसरा नं0 150 की 0.481 है0 कृषि भूमि में गोपाल, शारदा, विनोद, सुनिता, महेन्द्र का 0.649 है0 देवीलाल हवासिंह का 3.477 है0 मोहनलाल का 1.698 है0 बिमला बिरमा का 0.892 है0 भजनलाल बहादुर रोशनलाल का 1.680 है0 वादी शिशपाल का 0.558 है0 दर्ज राजस्व रिकार्ड है इसी प्रकार इसी खाता के खसरा सं0 323/1 की 0.253 है0 खसरा सं0 325/3 की 2.756 है0 में गोपाल शारदा विनोद सुनिता महेन्द्र की 1.243 है0 देवीलाल, हवासिंह की 1.243 है0 मोहनलाल की 0.934 है0 बिमला बिरमा की 0.307 है0 भजनलाल बहादुर रोशनलाल की 0.932 है0 प्रार्थी शीशपाल की 0.311 है0 दर्ज राजस्व रिकार्ड है में इसी प्रकार ग्राम बुढेर के खाता सं0 10/21 के खसरा सं0 5 कि 3.1110 है0 खसरा सं0 10 की 4.6160 है0 कृषि भूमि में गोपाल, शारदा, विनोद, सुनिता, महेन्द्र का 1/4 हिस्सा, मोहनलाल का 1/6 हिस्सा, विमला बिरमा का 1/12 हिस्सा, हवासिंह

देवीलाल का 1/4 हिस्सा प्रार्थी शिशपाल का 1/4 हिस्सा, दर्ज राजस्व रिकार्ड है इसी प्रकार ग्राम बुढेर के खाता सं० 11/22 के खसरा सं० 182/3 की 0.506 है० खसरा सं० 183/2 की 0.759 है० कृषि भूमि में दुनिराम श्योनाथ रतनलाल 0.633 है० गोपाल, शारदा, विनोद, सुनिता, महेन्द्र का 0.158 है० मोहनलाल का 0.158 है० देवीलाल, हवासिंह का 0.158 है० भजनलाल बहादुर रोशनलाल का 0.119 है० प्रार्थी शिशपाल की 0.039 है० इसी प्रकार इसी खाता के खसरा सं० 182/1 की 0.752 है० व खसरा सं० 184/4 की 2.390 है० में गोपाल, शारदा, विनोद, सुनिता महेन्द्र का 0.405 है० मोहनलाल का 0.661 है० बिमला, बिरमा का 0.315 है० देवीलाल, हवासिंह की 0.976 है० भजनलाल बहादुर रोशनलाल की 0.588 है० प्रार्थी शिशपाल की 0.197 है० कृषि भूमि दर्ज राजस्व रिकार्ड है।

ग्राम बुढेर के खसरा सं० 182/1 की 0.752 है० खसरा सं० 183/4 की 2.390 है० बारानी कुल दोनों खसरों की 3.142 है० बारानी कृषि भूमि व ग्राम शिवदानपुरा के खसरा सं० 291/1 की 1.239 है० बारानी, खसरा सं० 314/3 की 0.329 है० खसरा सं० 315/2 की 0.392 है० खसरा सं० 323/1 की 0.253 है० खसरा सं० 325/3 की 2.756 है० इस प्रकार कुल 4.9690 है० बारानी कृषि भूमि व ग्राम शिवदानपुरा के खसरा सं० 145/2 की 8.473 है० खसरा सं० 150 की 0.481 है० बारानी कुल 8.954 है० बारानी कृषि भूमि है।

ग्राम बुढेर के खसरा सं० 182/1 की 0.752 है० व खसरा सं० 183/4 की कुल 2.390 है० इस प्रकार इस खाता की कुल 3.1420 है० भूमि जिसमें सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 ता 8 जो सायल के भाई-बहन हैं जो 0.405 है० भूमि के बहिस्सा बराबर के खातेदार काश्तकार हैं व इसी प्रकार ग्राम शिवदानपुरा के खसरा सं० 291/1 की 1.239 है० व खसरा सं० 314/3 की 0.329 है० खसरा सं० 315/2 की 0.392 है० खसरा सं० 323/1 की 0.253 है० खसरा सं० 325/3 की 2.756 है० कुल 4.9690 है० भूमि में सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 का 1.242 है० भूमि के बहिस्सा बराबर के खातेदार काश्तकार हैं व इसी प्रकार खसरा सं० 145/2 की 8.473 है० बारानी व खसरा सं० 150 की 0.481 है० इस खाता की कुल 8.9540 है० भूमि में सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 का 0.649 है० बहिस्सा बराबर के खातेदार काश्तकार हैं इस प्रकार सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 उपर वर्णित तीनों खातों की कृषि भूमि अपने हिस्सा की कृषि भूमि काश्त करते हैं एवं सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 ने अपने तीनों खातों की कृषि भूमि में ग्वार, मूंग व बाजरे की फसल काश्त कर रखी है, जो अब पककर तैयार होने वाली है, गैरसायलान सं० 1 से 4 जो वाद भूमि के सहखातेदार हैं जो सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 को ऐलानिया तौर पर धमकी दे रहे हैं, कि उनके हिस्से की उनके द्वारा काश्त शुदा फसल को वो काटने व उठाने नहीं देंगे तथा सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 के हिस्से की भूमि में उनके कब्जा काश्त में दखल देने पर आमादा है। यदि गैरसायलान सं० 1 से 4 ताकत व बल के आधार पर सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 के हिस्से की काश्त शुदा फसल को काटने व ले जाने में कोई बाधा व दखल पहुंचाने में कामयाब हो जाते हैं तो सायल व दावा के प्रतिवादी सं० 5 से 8 को नापुरा होने वाला नुकसान होगा। ऐसी सूरत में सायल-गैरसायल सं० 1 से 4 को जरिये अस्थाई निषेधाज्ञा पाबन्द करवा पाने के कानूनी अधिकारी हैं कि वे उपर वर्णित तीनों खातों की कृषि भूमि में उनके हिस्से की कृषि भूमि में उनके कब्जा काश्त में दखल नहीं दें व तीनों खातों की

कृषि भूमि में उनकी काश्त शुदा फसल को काटने, निकालने, ले जाने में स्वयं या अपने आदमीयों द्वारा कोई बाधा व दखल नहीं पहुंचावे।

प्रार्थी द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र 212ख राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के संक्षेप में तथ्य इस प्रकार है कि उपरोक्त अनवानी प्रार्थना पत्र बाबत अस्थाई निषेधाज्ञा में न्यायालय हाजा द्वारा प्रार्थी शिशपाल की एक तरफा बहस सुन कर व प्रार्थी द्वारा पेश शपथ पत्र दस्तावेजों से सन्तुष्ट होकर प्रार्थी के पक्ष में अंतरिम अस्थाई निषेधाज्ञा जारी की गई थी, जिसकी जानकारी समस्त अप्रार्थीगण को हो चुकी है, चूंकि अप्रार्थीगण काफी उग्र स्वभाव के व्यक्ति हैं जो न्यायालय हाजा के स्थगन आदेश की जानकारी होने के बाद भी मौका पर प्रार्थी द्वारा काश्त की गई मूंग, मोठ व ग्वार की फसल को खुर्दबुर्द करने पर आमादा हैं और प्रार्थी को नुकसान पहुंचा कर अच्छी किस्म की कृषि भूमि पर कब्जा काश्त करने पर आमादा हैं। अप्रार्थीगण बार बार प्रार्थी को धमकी दे रहे हैं कि उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है तथा उन्हें राजनितिक संरक्षण प्राप्त है और खुलम खुला प्रार्थी को धमकी दे रहे हैं कि यदि जरूरत पड़ी तो हत्या जैसा कदम भी उठा सकते हैं, न्यायालय हाजा से निवेदन है कि वाद भूमि संयुक्त खाता की कृषि भूमि है तथा अप्रार्थीगण हर हाल में अच्छी किस्म की कृषि भूमि पर कब्जा काश्त करना चाहते हैं, और इसके लिए वे खुलेआम कानून हाथ में लेकर हत्या तक की धमकी दे रहे हैं, चूंकि उक्त वाद भूमि पर अब गम्भीर विवाद की विषय वस्तु बन चुकी है तथा मौका पर कभी कोई भी स्थिति बन सकती है और अप्रिय घटना कारित हो सकती है इसलिए इस विवादित भूमि पर रिसीवर नियुक्त किया जाना न्यायहित में आवश्यक है।

अतः प्रार्थना पत्र प्रार्थी पेश कर निवेदन है कि प्रार्थी का प्रार्थना पत्र स्वीकार किया जाकर ग्राम शिवदानपुरा के खाता सं० 50/53 के मु०नं० 133 की 0.253 है० मु०नं० 134 की 0.9490 है० मु०नं० 145 की 9.4090 है० मु०नं० 150 की 0.4810 है० कुल खसरा 4 कुल क्षेत्रफल 11.0920 है० इसी प्रकार इसी चक के खाता सं० 51/52 के खसरा सं० 145/2 की 8.473 है० खसरा सं० 150 की 0.481 है० कृषि भूमि, इसी प्रकार इसी खाता के खसरा सं० 291/1 की 1.239 है० खसरा नं० 314/3 की 0.329 है० खसरा सं० 315/2 की 0.392 है० खसरा सं० 323/1 की 0.253 है० खसरा सं० 325/3 की 2.756 है०, इसी प्रकार ग्राम बुढेर के खाता सं० 10/21 के खसरा सं० 5 की 3.1110 है० खसरा सं० 10 की 4.6160 है० कृषि भूमि, इसी प्रकार ग्राम बुढेर के खाता सं० 11/22 के खसरा सं० 182/3 की 0.506 है० खसरा सं० 183/2 की 0.759 है० कृषि भूमि, इसी प्रकार इसी खाता के खसरा सं० 182/1 की 0.752 है० व खसरा सं० 184/4 की 2.390 है० कृषि भूमि की बाबत रिसीवर नियुक्त किये जाने का आदेश सादिर फरमावें।

प्रार्थना पत्र प्रस्तुत होने पर दर्ज रजिस्टर किया जाकर अप्रार्थीगण को जरिये नोटिस तलब किया गया अप्रार्थीगण की तामील हो चुकी है। प्रकरण सं० 51/2017 में अप्रार्थीगण सं० 1, 5, 8 से 10 ने जबाब पेश कर कथन किया कि पक्षकारान के मध्य जमाबन्दी ग्राम शिवदानपुरा में दर्ज खाता सं० 51/52 का खाता विभाजन अन्य सहकाश्तकारों से दिनांक 27.02.2017 को हुआ था, जिसका जमाबन्दी सम्वत् 2072 से 75 में नोट है। इसी प्रकार ग्राम बुढेर की कृषि भूमि का खाता विभाजन अन्य सह काश्तकारों से हुआ, मुताबिक वर्तमान राजस्व रिकार्ड के विवरण जो भी इस मद में दर्ज किया गया है,

उससे कोई इन्कार नहीं है। उतरदातागण ने अपने हिस्से की भूमि में ग्वार, मूंग व बाजरे की फसल काशत कर रखी है, जो पक कर तैयार हो गई है, जिस पर सायल व उसके पुत्रों की नजर है, जो उक्त दावा व दरखास्त की आड़ में उतरदातागण को उनकी फसल को काटने व ले जाने से वंचित करना चाहते हैं यदि वास्तव में उनकी कोई फसल काशत की हुई होती तो वे इस मद में अवश्य उसका विवरण दर्ज करते। सायल ने न्यायालय से तथ्य छुपाये हैं व वह न्यायालय में क्लीन हैंड नहीं आया है, उसने तथ्य छुपाकर न्यायालय से निराधार अन्तरिम अस्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त की है एवं उसकी आड़ में वह उतरदातागण की कब्जा काशत की भूमि एवं उसमें काशतशुदा फसल जो पक कर तैयार है को काट कर ले जाने पर आमादा है। यदि वह ऐसा करने में कामयाब हो जाता है तो उतरदातागण को नापूरा होने वाला नुकसान होगा वे बरबाद हो जाएंगे व उनके भूखे मरने की नोबत आ जाएगी और उनकी मेहनत से तैयार फसल से वे वंचित हो जायेंगे।

बहस वकील उभय पक्षकारान सुनी गई। दौराने बहस वकील प्रार्थी ने कथन किया कि जहां संयुक्त खाता है वहां प्रत्येक इंच पर प्रत्येक सहकाशतकार का हक होता है मगर जिसने काशत की है फसल पर उसका हक होता है। कमिश्नर न्यायालय ने नियुक्त किया है। कमिश्नर ने मौका रिपोर्ट पेश की है मैंने पूरा हिस्सा काशत नहीं किया है, शेष जमीन खाली है, उस पर प्रार्थी/अप्रार्थी काशत करे। कमिश्नर ने काशत सम्बन्धी रिपोर्ट की है न कि कब्जा साबित किया है। इनका दावा 53 आरटीएक्ट का है। खाता विभाजन के अधिकारी है। दावा में विशिष्ट भू-भाग पर कब्जा या काशत का उल्लेख नहीं किया। स्वयं अच्छी मदी पर दावा पेश किया है। मैंने 188 का दावा पेश किया है उसमें स्पष्ट भू-भाग पर काशत का स्पष्ट अंकन किया है। इन्होंने अपना हिस्सा काशत नहीं किया और मेरे काशत में दखल करना चाहता है। सहकाशतकार को काशत से नहीं रोका जा सकता है। सहकाशतकार को कानूनी प्रावधानों का दुरुपयोग करने का अधिकार नहीं है। 212(ख) राजस्थान काशतकारी अधिनियम 1955 तब पेश होती है जब परिस्थितियां तनाव, विशिष्ट भू-भाग पर अप्रार्थी के कब्जे में बेदखली की आशंका हो। जब तक विभाजन न हो तब तक मैं विशिष्ट हिस्सा को मेरे कब्जा में होने का दावा नहीं कर सकता, जो व्यक्ति काशत नहीं करता वह दूसरे काशतकार को काशत से नहीं रोक सकता। मेरे पास काशत ही आजीविका का साधन है। मेरी फसल तैयार है, मुझे फसल काटने से रोकने पर अपूरणीय क्षति होगी।

वकील अप्रार्थीगण ने अपनी बहस में कथन किया कि मैंने खाता विभाजन का दावा किया, इन्होंने 188 का दावा किया। कोर्ट ने नायब तहसीलदार को कमिश्नर नियुक्त किया। कमिश्नर ने दोनों पक्षों में विवाद बताया है। संयुक्त खाते की जमीन, सहकाशतकार, प्रत्येक इंच पर बराबर के हकदार है। दोनों पक्षों ने स्टे की मांग की है। अभी यह तय नहीं होना है कि फसल किसकी है यह साक्ष्य द्वारा तय होना है। दोनों पक्षों में स्टे की मांग की है अतः दोनों पक्षों को पाबन्द किया जावे। मैंने 212(ख) राजस्थान काशतकारी अधिनियम 1955 का प्रार्थना पत्र पेश किया है। मेरा निवेदन है कि दोनों पक्षों में विवाद है इसलिए जमीन को कुर्क कर रिसीवर नियुक्त किया जाये। मुझे कमिश्नर रिपोर्ट पर एतराज है कि वो कब्जे के संदर्भ में नहीं कह सकते। कमिश्नर बाहरी साक्ष्यों (पूछताछ) के आधार पर रिपोर्ट तैयार नहीं कर सकता। प्रार्थी गोपाल ने भी किसी विशिष्ट भू-भाग दिशा आसा-पासा सहित का वाद में उल्लेख नहीं किया है वरन् अपने हिस्से में काशत करने का उल्लेख किया है।

हमारे द्वारा वकील अभिभाषकगण की बहस पर मनन किया गया। पत्रावली पर उपलब्ध दस्तावेजों व रिपोर्ट नायब तहसीलदार भादरा का अवलोदन किया। प्रस्तुत न्यायिक दृष्टान्त "Board of Revenue for rajasthan, Ajmer Rajesh singh & ors. VS Sovarah singh & ors." RRT 2003 (2) page 1216 व "न्यायिक दृष्टान्त" Board of reveve for rajasthan Ajmer, Ram kumar & Ors V/S Narayani devi & Ors. RRT2003(2) page 1101 का ससम्मान अवलोकन किया।

प्रस्तुत न्यायिक दृष्टान्त का सादर सम्मान करते हुए न्यायालय का मत है कि प्रस्तुत न्यायिक दृष्टान्त हस्तगत प्रकरण पर चस्पा नहीं होते हैं। हस्तगत प्रकरण में हकों की घोषणा बाबत वाद प्रस्तुत नहीं किया गया है वरन् एक पक्षकार शिशपाल द्वारा जोत के विभाजन का दावा अन्तर्गत 53 राज.काश्तकारी अधि. प्रस्तुत किया गया है व दूसरे पक्षकार गोपाल द्वारा स्थाई निषेधाज्ञा 188 राज.काश्तकारी अधि. का दावा प्रस्तुत किया गया है। दोनों पक्षों में वाद भूमि में हक-हिस्सा को लेकर कोई वाद प्रस्तुत नहीं किया गया है। वर्तमान में दोनों पक्षकारों द्वारा अपने अपने हिस्से का उपयोग उपभोग किया जा रहा है। दोनों पक्षों में कोई तनाव या फौजदारी प्रकरण जैसे साक्ष्य पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत नहीं किये गये हैं न ही पक्षकार शिशपाल आदि द्वारा यह साबित किया गया है कि पक्षकार गोपाल वगैरह द्वारा उनको काश्त से रोका गया या उनके कब्जा काश्त में दखल दिया है। नायब तहसीलदार की मौका रिपोर्ट में स्पष्ट अंकन किया गया है पक्षकार शिशपाल वगैरह ने अपने हिस्सा को खाली छोड़ रखा है। पक्षकार शिशपाल द्वारा प्रस्तुत जोत का विभाजन के मूल वाद में किस पक्षकार को कौनसा हिस्सा मिलेगा ये मूल वाद में तय किया जाना है। अस्थाई निषेधाज्ञा के प्रार्थना पत्र में प्राप्त मौका रिपोर्ट से किसी को हिस्सा विशेष में काबिज घोषित नहीं किया जा रहा है। माननीय न्यायालयों द्वारा समय समय पर यह सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं कि जब तक विशेष परिस्थितियां न हो तब तक एक सहकाश्तकार दूसरे सह काश्तकार के विरुद्ध अस्थाई निषेधाज्ञा प्राप्त करने का अधिकार नहीं रखता है। पक्षकार गोपाल द्वारा प्रस्तुत स्थाई निषेधाज्ञा के मूल वाद व अस्थाई निषेधाज्ञा के प्रार्थना पत्र 212 काश्तकारी अधिनियम 1955 में अपने कब्जा काश्त में दखलन्दाजी न किये जाने बाबत अनुतोष चाहा है। जब तक मूल वाद 53आरटीएक्ट का फ़ैसला नहीं हो जाता, काश्तकारों को उनके कब्जा काश्त का उपयोग उपभोग करने से रोकना उचित प्रतीत नहीं होता है। दोनों ही पक्षकार प्रथम दृष्टया मामला साबित करने में सफल रहे हैं मगर पक्षकार शिशपाल वगैरह सुविधा का संतुलन व अपूरणीय क्षति का बिन्दु साबित करने में असफल रहे हैं। जबकि पक्षकार गोपाल वगैरह सुविधा का संतुलन व अपूरणीय क्षति का बिन्दु साबित करने में सफल रहे हैं। वाद भूमि में पक्षकार गोपाल वगैरह को कृषि कार्य हेतु अपने हक हिस्सा का शांतिपूर्ण उपयोग-उपभोग काश्त सुविधा का अधिकार है व पक्षकार गोपाल वगैरह को उनके द्वारा मेहनत से तैयार की गई फसल के उपभोग से रोकने से पक्षकार गोपाल वगैरह को अपूरणीय क्षति की पूर्ण सम्भावना है। बिना विशेष परिस्थिति के वाद भूमि को रिसीवर किया जाना उचित व न्यायसंगत नहीं है।

अतः : प्रार्थना पत्र शिशपाल बनाम गोपाल अन्तर्गत धारा 212 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 को नासाबित होने के कारण खारिज किया जाता है व न्यायालय द्वारा दिनांक 06.09.2017 को पारित अन्तरिम अस्थाई निषेधाज्ञा आदेश को अपास्त व खारिज किया जाता है। पत्रावली में प्रस्तुत प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 212(ख)

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 को स्वीकार योग्य नहीं होने के कारण खारिज किया जाता है।

प्रार्थना पत्र गोपाल बनाम शिशपाल अन्तर्गत 212 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के तीनों बिन्दु प्रथम दृष्टया मामला, सुविधा का संतुलन, अपूरणीय क्षति साबित होने के कारण स्वीकार किया जाता है व न्यायालय द्वारा 19.09.2017 को पारित अन्तरित अस्थाई निषेधाज्ञा के स्थान पर अप्रार्थीगण के विरुद्ध अस्थाई निषेधाज्ञा ताफैसला वाद इस अमर की जारी की जाती है कि अप्रार्थीगण वाद भूमि में प्रार्थी के हक हिस्सा तक उसके कब्जा काश्त में स्वयं या अपने आदमियों के मार्फत दखलन्दाजी न करें।

निर्णय आज दिनांक को 18-10-17 को मेरे द्वारा लिखवाया जाकर खुले न्यायालय में सुनाया गया।

(राजकुमार कस्वा)

R.A.S.

सहायक कलक्टर (फास्ट-ट्रैक)

भादरा, जिला हनुमानगढ़